श्रीजिनेन्द्रायनमः

थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी

१

चाल—[नाटक] क़िसमत सयपर लाती आफ़त ॥

तू हितकारी नाथ जगतका महिमा तेरी अपमपार ॥
सबके हितु तुम सब जीवनको शिव मग दरसाया सुखकार ॥
सूरज चंदर इंदर सुर नर गावें सब तेरा उपकार ॥
खंडन कर पाखंड जगतके दिखलाया सतका व्यवहार ॥
सब भ्रम मिटा दिया-सतासत दिखा दिया ॥
मोह तम हटा दिया-रसते लगा दिया ।
तेरे नाम को रटें-मिथ्यातसे हटें ॥
पापों से हम छुटें-न्यामत करम कटें ॥ तू० ॥

102

२

चाल—(क़व्वाली) हुवा सुत राम दशरथके बहादुर हो तो ऐसा हो ॥

न द्वेषी हो न रागी हो सदानन्द वीतरागी हो ॥
वह सब विषयोंका त्यागी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ १
न खुद घट घटमें जाता हो मगर घट घटका ज्ञाता हो ॥
वह सत उपदेस दाता हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥

न करता हो न हरता हो नहीं अवतार धरता हो ॥
मारता हो न मरता हो जो ईश्वरहो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
ज्ञानके नूरसे पुर नूर हो जिसका नहीं सानी ॥
सरासर नूर नूरानी जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥
न क्रोधी हो न कामी हो न दुश्मन हो न हामी हो ॥
वह सारे जगका स्वामी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥
वह ज़ाते पाक हो दुनियाके झगड़ों से मुबर्रा हो ॥
आलिमुल ग़ैब हो बेऐब ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥
दयामय हो शान्त रस हो परम वैराग मुद्रा हो ॥
न जाबिर हो न क़ाहिर हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ७ ॥
निरंजन निर्विकारी हो निजानन्द रस विहारी हो ॥
सदा कल्याणकारी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ८ ॥
न जग जंजाल रचता हो करम फलका न दाता हो ॥
वह सब बातोंका ज्ञाता हो जो ईश्वर होतो ऐसा हो ॥ ९ ॥
वह सच्चिदानन्द रूपी हो ज्ञान मय शिव सरूपी हो ॥
आप कल्याण रूपी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ १० ॥
जिस ईश्वरके ध्यान सेती बने ईश्वर कहे न्यामत ॥
वही ईश्वर हमारा है जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ११ ॥

३

चाल—(क़वाली) इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

जगत करता नहीं ईश्वर अगर होवे तो मैं जानूं ॥
सरे मू भी फ़रक़ इसमें अगर होवे तो मैं जानूं ॥ १ ॥

ज़रा इंसाफ़ करके यार मेरी बात सुन लीजे ॥
जो करताका तुम्हें विश्वास फिर होवे तो मैं जानूं ॥ २ ॥
जो ईश्वर सर्व व्यापी है तो हरकत कर नहीं सकता ॥
कभी आकाश मुतहर्रिक अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ३ ॥
बिना हरकत किये हरगिज़ नहीं कोई काम हो सकता ॥
कोई आकरके जितलावे अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ४ ॥
जगत साकार और ईश्वर निराकार आप माने हैं ॥
कोई साकार नीराकारसे होवे तो मैं जानूं ॥ ५ ॥
खिलाफ़ होता नहीं कोई अमर क़ानून क़ुदरतके ॥
कोई सौ हुज्जतें लावे अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ६ ॥
हज़ारों बन गये बे बाप मां इनसान कहते हो ॥
नहीं कोई सबूत इसका अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ७ ॥
मनुश मां बापसे पैदा हो यह क़ानून क़ुदरत है ॥
गलत हुवा आपका मसला जो सच होवे तो मैं जानूं ॥८॥
चाहे लन्दन फरांस इटली रूस जरमनमें फिर आवो ॥
खिलाफ़ इसके नहीं होगा अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ९ ॥
वह ईश्वर सच्चिदानन्द है वह ज्ञाता और द्रिष्टा है ॥
न करता है न हरता है अगर होवे तो मैं जानूं ॥ १० ॥
बिना समझे जगत करताका लोगों को हुवा धोका ॥
न्याय पढ़ देखिये धोका न दूर होवे तो मैं जानूं ॥ ११ ॥
कहे न्यामत न्याय परमानसे तहक़ीक़ कर लीजे ॥
जगत करतामें को परमान गर होवे तो मैं जानूं ॥ १२ ॥

४

चाल-(नाटक) दिले नादां को हम समझाए जाएंगे ॥

हमतो जिनवानी सबको सुनाए जाएंगे ॥
मानो न मानो यह मंशा तुम्हारी ॥
न समझानेसे हमतो बाज़ आएंगे ॥ हम० ॥
है यह जिनवानी जो पाखंड का सब नाश करे ॥
झूटे मसलों को हटा सत्य का परकाश करे ॥
सिदक़ दिलसे जो कोई सुनेकी अरदास करे ।
करमों को काटके मुक्ती में वह जा बास करे ॥
फिर न दुनियाके झगड़ोंमें रगड़ोंमें लौट आएंगे ॥हम० ॥ १ ॥
न्याय परमानसे तत्वोंको दिखाया इसने ॥
जग अनादिहै स्वयम सिद्ध जिताया इसने ॥
भ्रम करताका था न्यामतको, हटाया इसने ।
करता हरता है यही जीव बताया इसने ।
सदा इसकेही धनबाद गुणवाद गाए जाएंगे ॥ हम० ॥ २ ॥

५

चाल-(नाटक) सुनले बीबी बातें मेरी कान लगाकर तू झट पट ॥

सुनलो ज्ञानी अब जिनवानी कान लगाकर तुम झटपट ॥टेक॥
राग द्वेष कोई नहीं जामें-सत उपदेश भरा है तामें ॥
कारण शिव लेजानेको । सुनलो० ॥ १ ॥
जगमें पाखंड का फैला तम-जिनवानी है सूरज के सम ।
भ्रमतम दूर हटानेको । सुनलो० ॥ २ ॥

जो तुम सच्ची मुक्ती चाहो–जिनवानीपर निश्चय लावो ॥
छोड़ो झूट वहानेको । सुनलो० ॥ ३ ॥
नय परमानको आगे रखके । न्यामत इसको निरख परखके ॥
देखो भरम मिटानेको । सुनलो० ॥ ४ ॥

६

चाल— (नाटक) तेरी छलबल है प्यारी तेरी कलबल है प्यारी ॥

तेरी वानी है प्यारी-सवहीको हितकारी ॥
कीजो कीजो प्रभू सवका उद्धार ॥
है वह सब सुखकारी-दुखहारी भवटारी ॥
करदेती है भव सागरसे पार ॥
हैं वह सारे नादान-करते नहीं जो तेरा ध्यान ॥
हित मित वैना सुनावो भगवान ॥
सप्त तत्वोंकी वात-होवे करमोंका घात-मिटे सारा मिथ्यात ॥
दोनों जगमें-एक छिनमें-एक पलमें ॥ तेरी० ॥

७

चाल—यह जो असलियत तेरी पहले थी तुझे यादहो कि न याद हो ॥

विषे भोगमें तूने अय जीया कैसे जीको अपने लगादिया ॥
तेरा ज्ञान सूर्य्य समान था कैसे बादलोंमें छुपादिया ॥ १ ॥
तू तो सच्चिदानन्द रूप है तेरा ब्रह्मरूप सरूप है ॥
जड़रूप भोग विलासमें तूने आपनेको भुलादिया ॥ २ ॥
यह भोग शत्रु समान हैं छल कपटमें परधान हैं ॥
तेरे यार बनके तू देखले तुझे चारों गतमें रुलादिया ॥ ३ ॥

कुमताने अय न्यामत तुझे जग जालमें है फँसादिया ॥
दामन सुमत सी नारका तेरे करसे इसने छुड़ादिया ॥४॥

८

चाल—(नाटक) क़िसमत सबपर लाती आफ़त ॥

क्यों करतेहो निशदिन रगड़ा झगड़ा आपसमें तकरार ॥
बिगड़ जायगा देश तुम्हारा धन सम्पत सारा घरबार ॥
निर्बल होजावोगे और होजावोगे फ़रमांबरदार ॥
बल शक्ती सबकी घटजागी क्या राजा क्या साहूकार ॥
अंक तीन (३) के हैं दो-मुख जोड़के लिखो ॥
तरेसठ (६३) रक़मपढ़ो-बल इस कदर बढ़ो ॥
जब प्रेम हटगया-और मूंह उलटगया ॥
तब बल पलट गया-छत्तीस (३६) घट रहा ॥ १ ॥
ना इतफ़ाक़ीका फल ऐसा जैसा नौ (९) का कोठा यार ॥
लिखते लिखते अंक दाहना घट जावे इक अंश हरबार ॥
नौ (९) अट्ठारह (१८) सत्ताईस (२७) छत्तिस (३६) पैंतालीस (४५) चंउवन (५४) धार ॥
घटगया एक एक अंश देखलो नौ (९) आठ (८) सत (७) छे (६) पंच (५) और चार (४) ॥
इतफ़ाक़ कीजिये-ग्यारा (११) को लीजिये ॥
लिख देख लीजिये-और ग़ौर कीजिये ॥
एक अंश बढ़ गया-बढ़ता चलागया ॥
न्यामत यह कह रहा मिलकर रहो सदा ॥ २ ॥

९

चाल—(क़वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे

सांच प्रघटे झूट विघटे न्याय तलवार ऐसी है ॥
कोई आ देखले जिनराजकी सरकार ऐसी है ॥ १ ॥
फ़िलोसफ़ी करमकी है अटल दुनिया में अय यारो ॥
कुयुक्ती सारी कटजावे न्यायकी धार ऐसी है ॥ २ ॥
स्याद्वादांगका नेज़ा अगर मैदां में आ चमके ॥
नहीं, ठैरे कोई पाखंड उसकी मार ऐसी है ॥ ३ ॥
जगत करता नहीं कोई यह नादानों का मसला है ॥
जीव करता करम हरता कही सरकार ऐसी है ॥ ४ ॥
यक़ीं सादिक़ इलम सादिक़ अमल सादिक़ यह तीनों मिल ॥
सड़क शिवकी वनी जूं रेल यह हमवार ऐसी है ॥५॥
सुनो तत्वार्थ है सच्चा कलाम ईश्वरका दुनियामें ॥
निरख देखो कहे न्यामत सरे बाज़ार ऐसी है ॥ ६ ॥

१०

चाल—(क़वाली) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

सांचके सामने तक़रीर झूटी चल नहीं सकती ॥
मिला देखो सांचमें झूट हरगिज़ मिल नहीं सकती ॥ १ ॥
हितोपदेशी वीतरागी आलिमुलग़ैब ईश्वर है ॥
सरूप उसका यही इसमें कुयुक्ती चल नहीं सकती ॥ २ ॥
न हरता है न करता है नहीं सिष्टीका रचिता है ॥
गलत करताका मसला इससे मुक्ती मिल नहीं सकती ॥३॥

वेदका भाष रचकर आपने करता किया क़ायम ॥

मगर करतामें कोई भी तो युक्ती चल नहीं सकती ॥४॥

तुम्हारे नाम से वेदों को था बदनाम होजाना ॥

तुम्हारा दोष क्या टालेसे होनी टल नहीं सकती ॥ ५ ॥

बहकाया आज तक तो आपने भारतके लोगों को ॥

मगर समझो तुम्हारी दाल अबतो गल नहीं सकती ॥६॥

यह मुमकिन है कि फंस जावें तुम्हारे जालमें मूरख ॥

हमारे सामने तक़रीर झूटी चल नहीं सकती ॥ ७ ॥

बहका करके यूं औरों को भला फल क्या उठावोगे ॥

यह मसला है, बुराई जगमें हरगिज़ फल नहीं सकती ॥८॥

न्याय परमान से तहक़ीक़ करलेना मुनासिब है ॥

न्यायमत न्यायके आगे किसीकी चल नहीं सकती ॥ ९ ॥

११

चाल—(नाटक) सदा नहीं रहनेका मेरी जान हुसनपर यूं हीं अकड़ता है ॥

नहीं करताका कोई परमाण झूटपर यूंहीं झगड़तेहो ॥ टेक ॥

झूटी युक्ती करते हो और इतने अकड़ते हो ॥

नाहक़ लड़तेहो बीच वेदोंको रगड़तेहो ॥

सिद्ध नहीं होता है करतार ॥ झूट पर० ॥ १ ॥

कहतेहो बिन किये नहीं कोई चीज़ बने ज़िनहार ॥

तो बतलावो उस करताका कौन बने करतार ॥

तुम्हारा पक्ष मिटा अब यार । झूट पर० ॥ २ ॥

अगर कहो करता होने में है उनमान प्रमाण ॥

बिन प्रत्यक्ष अनुमान न होवे यही नयायकी आन ॥
नयायको पढ़ देखो एक वार ॥ झूठ पर० ॥ ३ ॥
बिना बाप मांके पैदा नहीं होता है इनसान ॥
कैसे हज़ारों बने, बिना मां बाप कहो परमाण ॥
हुवा झूठा सत्यार्थ तुम्हार । झूठ पर० ॥ ४ ॥
करता कार्य का जिस जिस में होता है सम्बन्ध ॥
वहां अन्वे व्यतिरेक सदा होता है सुनो मतीमन्द ॥
सिद्ध ईश्वर में करो तो यार । झूठ पर० ॥ ५ ॥
है ईश्वर सच्चिदानन्द और ज़ात पाक बे ऐब ॥
ना वह करता ना वह हरता है वह आलिमुल ग़ैब ॥
उसीका ध्यान करो सुखकार ॥ झूठ पर० ॥ ६ ॥
जो वह बनावे नाश करे, हो राग द्वेष में लीन ॥
बीतरागकी ज़ातको तुम क्यों करते हो मलीन ॥
नहीं है यह सत्यार्थ विचार ॥ झूठ पर० ॥ ७ ॥
जगत अनादी स्वयम सिद्ध है ना कोई करतार ॥
यह मसला है अटल इसीको दिल में लीजे धार ॥
कहे न्यामत तुमसे हरबार ॥ झूठ पर० ॥ ८ ॥

१२

चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

जहालतका सुनो यारो अजब अन्धेर छाया है ।
पढ़े लिक्खों की आखोंपे ग़ज़ब चशमा चढ़ाया है ॥१॥
मुक़द्दस वेद कह कहकर मचाया शोर दुनिया में ।

जो देखा भाष स्वामीका नहीं कुछ सार पाया है ॥ २ ॥
न सत उपदेश है उसमें नहीं साइंस है उसमें ।
असलमें बेदकी बातों को उलटा कर दिखाया है ॥ ३ ॥
इबारतमें ही जब उसके नहीं है सिलसला कोई ॥
सो क्यों उसको कलाम ईश्वर बता धोका दिलाया है ॥४॥
रेल और तार कहनेसे नहीं वेदोंकी इज्जत है ॥
जो सच पूछो तो तुमने वेदको बट्टा लगाया है ॥ ५ ॥
यजुर वेद अध्याय चौवीस (२४) तेईस (२३) मंत्रको देखो ॥
कबूतर खाना खासा तुमने वेदोंको बनाया है ॥ ६ ॥
भला कहो तो मुरगों से मिलेगा किस तरह ईश्वर ॥
दरखतोंके लिये उल्लू कहो तो क्यों बताया है ॥ ७ ॥
नीलकंठ और कबूतर मोर से क्या आपका मतलब ।
बतावो तो नया साइंस क्या तुमने चलाया है ॥ ८ ॥
बदलके अर्थको वेदोंके जो ढांचा बनाया है ।
कहे न्यामत नहीं ठैरेगा यह अब भेद पाया है ॥ ९ ॥

१३

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

हुकम हमको पिताका अब बजाना ही मुनासिब है ॥
अवधको छोड़कर जंगलमें जाना ही मुनासिब है ॥१॥
नहीं है रासका मौका सुनो लछमन मेरे भाई ।
मात केकई के आगे सर झुकाना ही मुनासिब है ॥२॥
अवधके तख्तपर अब तो नहीं बैठूंगा मैं हरगिज ।

ताज मेरा भरतके सर सजाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
धनुष तुमने जो चिल्लेपे चढ़ाया है बिना समझे ।
धनुषको चापसे उलटा हटाना ही मुनासिब है ॥ ४ ॥
राजके वास्ते भाई न भाईसे लड़ेंगे हम ॥
वचन राजाका अब हमको निभाना ही मुनासिब है॥५॥
हुआ भारत सभी गारत पड़ी जो फूट आपसमें ।
कहे न्यामत फूट को अब मिटाना ही मुनासिब है ॥६॥

१४

चाल—कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली मोहे पीके द्वारे पहोंचा देती ।

अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे ।
मुझे मरनेका खौफो खतर ही नहीं ॥
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना ॥
तुझे होनीकी अपने खबर ही नहीं ॥ १ ॥
क्या तू सोनेकी लंका का मान करे ।
मेरे आगे यह मिट्टीका घर ही नहीं ॥
मेरे मनका समेरू हिलेगा नहीं ।
मेरे मनमें किसी का भी डर ही नहीं ॥ २ ॥
तूने सहस अट्ठारा जो रानी वरी ।
हाय उनपे भी तुझको सबर ही नहीं ।
पर तिरयापे तूने जो ध्यान किया ।
क्या निगोदा नरकका खतर ही नहीं ॥ ३ ॥
आवें इन्द्र नरिन्द्र जो मिलके सभी ।

क्या मजाल जो शीलको मेरे हतें ।

तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया ॥

मेरी नजरों में कोई वशरही नहीं ॥ ४ ॥

क्यों ना जीत स्वयंवर तू लाया मुझे ।

मेरी चाह थी मनमें जो तेर वसी ॥

था तू कौन शहर मुझे दे तो वता ।

क्या स्वयंवर की पहोंची खवर ही नहीं ॥ ५ ॥

हुवा सोतो हुवा अव मान कहा ।

मुझे रामपे जलदी से दे तू पठा ।

कहे न्यामत वगरना तू देखेगा यह ॥

ते रे सरकी क़सम तेरा सर ही नहीं ॥ ६ ॥

१५

चाल—सखी सावन वहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

हमारी क़ौमकी वेड़ा पड़ा वहेर जहालत में ।

ज़रा तुम खोलकर कालिज लंघादोगे तो क्या होगा ॥१॥

सिरफ़ छै लाख की हमको ज़रूरत है सुनो साहिव ।

खोलकर जी ज़रूरत को मिटादोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥

वड़े दानी दयाधारी जैन मशहूर दुनिया में ।

यहांपर भी दया अपनी दिखादोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥

पचास हज़ार तो मौजूद हैं इस फंड कालिजमें ।

वह साढ़ेपांच लाख वाक़ी दिलादोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥

साल उन्नीस सौ और चार यह कैसा मुवारक है ॥

इसीमें नीम कालिजकी रखादोगे तो क्या होगा ॥ ५ ॥
अंबाले की सभामें आज कालिजका रेजोल्यूशन ।
हुवा है पेश, मंजूरी करा दोगे तो क्या होगा ॥ ६ ॥
बिना कालिज तरक्की जैनका जरया नहीं कोई ।
अगर होतां कहे न्यामत जितादोगेतो क्या होगा ॥ ७ ॥

१६

चाल—(चतर मुकट) चंद्रा तू लेजा संदेस हमारारे ॥

माता तू सुनले बात हमारीरी ॥ टेक ॥
अरी कौन किसीका बाप है कौन भ्रात और मात ।
जितने नाते जगतके सब स्वारथकी बात ॥
जगतमें कोई नहीं हितकारी री ॥ माता० ॥ १ ॥
नहीं किसीका दोप है नहीं तुम्हारा दोप ।
अरी दोप हमारे करमका अब राखो संतोष ॥
करमकी टरे नहीं गती टारी री। माता० ॥ २ ॥
अब आज्ञा देदो मुझे जाती हूं गिरनार ।
कर कंगण तारो मेरे तारो हार संगार ॥
न्यायमत जिन दिक्षा सुखकारी री ॥ माता० ॥ ३ ॥

१७

चाल—लगी लो जान जानां से तो जानाही मुनासिब है ॥

गये गिरनेम मुझको भी तो जाना ही मुनासिब है ।
लगी है प्रीत जिनजीसे निभाना ही मुनासिब है ॥१॥
वैरागी मन बदन सारी हाथ मय्यूरकी पींची ॥

भेस मेरा अरजकांका बनाना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
मांग मेरी नहीं भरना शीलको दाग़ लगता है ॥
केशका लोचकर जोगन बनाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
किसीका कौन है जग में सभी स्वारथके साथी हैं ॥
मेरेसे अब तुम्हें चितको हटाना ही मुनासिब है ॥४॥
विषे और भोगकी बातें मेरे मनको नहीं भातीं ॥
मुझे बैरागकी बातें सुनाना ही मुनासिब है ॥ ५ ॥
उतारो सब मेरा गहना हार बेसर कटी बैना ॥
शील सिंगार तनमन में सजाना ही मुनासिब है ॥६॥
कहे राजल सुनो माता मुझे गिरनार जाने दे ॥
क़दम बैरागमें न्यामत बढ़ाना ही मुनासिब है ॥ ७ ॥

१८

चाल—हुवा सुत राम दशरथके बहादुर हो तो ऐसा हो ॥

बसू के लाल गिरधारी जो चातुर हो तो ऐसा हो ॥
हरा जा कंस राजाको बहादुर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
हते मल्ल युद्ध कर बन में उखाड़ा थंब इक छिनमें ॥
उठाया शैल उंगरीपे दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
उधर सिशुपालको मारा कि लाए रुकमनी तारा ॥
इधर जरासिंध भी हारा बहादुर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
महाभारत किया भारतमें जीता दुष्ट कौरों को ॥
पदम हारा धात खंडमें बहादुर हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥
वह अब शिव मग बताने को लेंगे अवतार तिर्थंकर ॥
नमें न्यामत चरण जुगमें दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥

१९

चाल—उमराव थारी बोली प्यारी लागे महाराज ॥

महावीर थारी वानी नीकी लागे महाराज ॥
महाराज थारी वानी नीकी लागे महाराज ॥ टेक ॥
जिन वानी के सुनतही मिटे मोह संताप ॥
अशुभ करम सब दूर हों दूर होएं सब पाप ॥ थारी० ॥ १ ॥
भील जटायू बान्दरे और अंजनसे चोर ॥
न्यामत जिन वानी सुनी सुगत गए अघ तोर ॥ थारी० ॥२॥

२०

चाल ॥ सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

अरे चेतन उठो उठकर चलो दरबार अपने को ।
बुलाकर ज्ञानको जलदी करो दरबार अपने को ॥ १ ॥
मगर यह याद रख लीजो कुमतका संग मत कीजो ॥
वगरना फिर इसी हालतमें तुम पावोगे अपनेको ॥ २ ॥
श्री अरिहन्त हैं सच्चे सुनो सरकार दुनिया में ॥
सदा सरको झुकाते तुम रहो सरकार अपने को ॥ ३ ॥
हुकम जो कुछ दिया सरकारने तत्वार्थ शासनमें ।
करो पाबन्द उन अहकामका हरबार अपने को ॥ ४ ॥
कहा अपना समझ करके कोई परको नहीं कहता ।
कोई कहताहै तो कहता है न्यामत यार अपने को ॥५॥

२१

चाल—जिसने एक बार तुझे माहेजबीं देख लिया ॥

जैसा जो करताहै भरताहै यहीं देख लिया ।

करम का टाला नहीं टलता है फल देख लिया ॥ १ ॥
बदसे बद, नेक से नेकी का समर मिलता है ।
आज जो जैसा किया वैसा ही कल देख लिया ॥ २ ॥
हरके सीताको जो रावणने कुमत ठानी थी ॥
आप मारा गया हरने के बदल देख लिया ॥ ३ ॥
न्यायमत जो कोई कलपाता है जी औरों का ॥
याद रक्खो वह भी पाता है न कल देख लिया ॥ ४ ॥

२२

चाल—अमोलक धरम रतन प्यारे ॥

नींदसे जागो मतवारे । वक्त जाता है चला प्यारे ॥ टेक ॥
बिन कालेज के उन्नती प्यारे होनी है दुशवार ।
कमर बांधके खोलदो प्यारे विद्याका भंडार ॥
दिगम्बर स्वताम्बर सारे ॥ नींद० ॥ १ ॥
एक दिन छैहों खंड में था जिनमतका परकाश ॥
आज अविद्या छा गई प्यारे रह गई चौदा लाख ॥
आंख खोलो अब तो प्यारे । नींद० ॥ २ ॥
मुसलमान सिख आरया और ईसाई सारे ।
पीछेसे आगे हुवे खोले कालेज भारे ।
रहे पीछे जिनमतवारे । नींद० ॥ ३ ॥
बद रसमों को छोड़दो प्यारे चलो जैन मरजाद ।
फजूल खरची त्यागके करो कालेज की इमदाद ॥
कहे न्यामत सुनलो सारे ॥ नींद० ॥ ४ ॥

२३

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाय जिसका जी चाहे ॥

नक़ारा धर्मका बजता है आए जिसका जी चाहे ॥
सदाक़त जैनमतकी आज़माए जिसका जी चाहे ॥१॥
खुला दरबार है अब फैसला करलो सतासतका ।
शकूकेतवा जो होवें मिटाए जिसका जी चाहे ॥ २ ॥
जो बे बुनियाद युक्ती हो वह हरगिज़ चल नहीं सकती ॥
मुक़ाबिल सेठ मेवाराम आए जिसका जी चाहे ॥ ३ ॥
न पर खंडनसे मतलब है न मंडन मुद्दआ अपना ।
सतासत निरणय करते हैं कराए जिसका जी चाहे ॥४॥
दलीलों से तजरबों से करेंगे फ़ैसला सबका ।
कहे न्यामत किसी मतवाला आए जिसका जी चाहे ॥ ५॥

२४

चाल—है बहारे बाग़ दुनिया चंद रोज़ ॥

यक बयक उलटा ज़माना होगया ॥
काल पंचमका बहाना होगया ॥ १ ॥
सतासत निरणय कोई करता नहीं ॥
पक्षका यारो ज़माना होगया ॥ २ ॥
शील संजम हाय भारतसे गया ।
न्योग का करना कराना होगया ॥ ३ ॥
बाप करता है नमस्ते पुत्रको ।
कहिये क्या उलटा ज़माना होगया ॥ ४ ॥

नाम भीती हिन्दसे जाता रहा।
भाई से भाई बिगाना होगया ॥ ५ ॥
रंग ढंग सब देश अपने का तजा।
दूसरे देशोंका बाना होगया ॥ ६ ॥
न्यायमत अब ख्वाब ग़फ़लत से उठो।
सोते सोते तो ज़माना होगया ॥ ७ ॥

२५

चाल—(नाटक) पिया आय ना अरी हमसे सहा दुख जाय ना ॥

तुम आवोना ज़रा आके धरम सुनजावोना ॥
तेरे प्यारे-भ्रम सारे-नियारे होवें। तुम० ॥
जैनबानी सुधारस जान के नित पान करो।
स्याद्वादांगसे सच झूठकी पहिचान करो ॥
मुख महावीर हिमाचल से यह निकली गंगा।
कर्म मल धोने को न्यामत सदा अशनान करो ॥
कहीं जावो ना-दुख पावो ना--घबराओ ना ॥
ज़रा आके धरम सुन जावो ना ॥ तुम० ॥

२६

चाल—(गज़ल) एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले ॥

फैला हुवा है सारे दुनियामें ज्ञान तेरा। टेक।
हिंसा को है हटाया-दया मय धरम बताया ॥
ममनून हो रहा है-इन्सां हैवान तेरा ॥ फैला० ॥ १ ॥
रागी नहीं तू द्वेषी-तू है हितोपदेशी ॥

मुनीजन लगा रहे हैं–हिर्दै में ध्यान तेरा ॥ फैला० । २ ।
परमाण नय दिखाया–सतका पता लगाया ॥
धनवाद गा रहे हैं-सब एक जुबान तेरा ॥ फैला० ॥ ३ ॥
तू शुद्ध सरूप वाला–रस्ते लगाने वाला ॥
न्यामत अदा न हमसे–होगा अहसान तेरा ॥ फैला० ॥४॥

२७

चाल—(नाटक) सुनिये सुनिये सरकार ॥

अय जिया अवतो जाग–सत विषयन को तयाग ॥
प्यारे सातों से भाग–इन से यारी न कर ॥ १ ॥
छोड़ो चोरी की बात–जूवे बाजोंका साथ ॥
तजो जीवन का घात–दया दिलमें तो कर ॥ २ ॥
पर नारीको जान–माता भगनी समान ॥
लखो होके अयान–नहीं खोटी नज़र ॥ ३ ॥
जो हो गणिका में लीन–बल वीरज हो क्षीन ॥
होवे निर्धन वे दीन–सड़े नरकों में पड़ ॥ ४ ॥
मास मद्राका पान–बुरा है जगमें जान ।
यामें पाप महान–नहीं अच्छा समर ॥ ५ ॥
न्यायमत कर विचार–तजो सातों अचार ॥
वरना होवेगा ख्वार–है यह सच्ची खबर ॥ ६ ॥

२८

चाल—[illegible]

त्रोधासुर मारो भीति बरछी तान तान तान । टेक ।

दिग स्वेताम्बर का रगड़ा-जबसे है पड़गया झगड़ा ॥
ढंग जैन धरमका बिगड़ा--होगई हान हान हान ॥ १ ॥
तजदो दौ दिग स्वेताम्बर-यह है झूठा आडम्बर ॥
बैठो पहन जैनमत अम्बर-एक ही थान थान थान॥२॥
अब प्रसपर प्रीत विचारो-सब मनका रोस निवारो ॥
बातशल अंग दिलमें धारो-तजकर मान मान मान॥३॥
मत खींचा तानी लावो-सब आपस में मिल जावो ॥
कालेज भारी खुलवावो-जल्दी आन आन आन ॥४ ॥
एकही चोबीस तिर्थंकर-एक तत्व एक ही मंतर ॥
क्या सीतम्बर दीसम्बर-पड़गई कान कान कान ॥ ५ ॥
देखो मुसलमान ईसाई-क्या सिख क्या आरज भाई ॥
खोले कालेज, दिखलाई-अपनी शान शान शान ॥ ६ ॥
जो जिनकालेज खुलजावे-सच्चा मारग दरसावे ॥
न्यामत मिथ्या तम जावे-चमके भान भान भान ॥७॥

२१

चाल—(नाटक) ऐसे तुझसे ऐरे ग़ैरे मैंने लाखों देखे भाले ॥

सेवें तेरा दरबार मुनी ज्ञानी ध्यानी सारे ॥
स्वर्गों माहीं इन्दर सारे-भू मंडलके प्राणी सारे ।
क्या सूरज क्या चन्दर तारे ॥ तेरा० ॥
तुम से अपना दुख जितलाने को जो आते हैं जो आते हैं ॥
वह तेरे दर से सुगती मुक्ती पाते हैं वह पाते हैं ॥
आवो आवो जलदी आवो-मतना इसमें देर लगावो ॥

श्री जिन आगे सीस झुकावो ॥ देखो देखो एक दम ॥
होवे मिथ्याभाव कम-आवे मनमांही सम-बढ़े संजम समदम ॥
अजी आवो आवो देखो भाले शिव नगरी को जानेवाले ॥

३०

चाल—(नाटक) आहा प्यारा दिन है न्यारा शाहज़ादी की शादी का ॥

आहा प्यारा दिन है न्यारा वक्त मिला आज़ादी का ॥
भव जन सब जन मिलकर बैठे दिनहै मुबारक बादीका॥ १॥
महा सभा क़ायम सदा रहे दायम आवें हम झननन झूम ॥
बादे बहारी आके पुकारी सननन नन नन सूम ॥ २ ॥
अनाथ आश्रम ऐशोसियशन मिच रही धननन धूम ॥
कालेज आश्रमके चन्दे की हो रही छननन छूम ॥ ३ ॥
पंडत जन घन घोर घटा घिर आई घननन घूम ॥
जिन वानी अमृत रस बरसे छननन नन नन छूम ॥ ४ ॥
फजूल खरची और बद रसमी हनी हननन हूम ॥
क्रोधा सुर को मारा प्रीति राइफल धननन धूम ॥ ५ ॥
जिन गुण गावें पाप नसावें नाचें छननन छूम ॥
बीन बांसुरी ताल मंजीरे बज रहे सननन सूम ॥ ६ ॥
सुरासुर आवें फूल बरसावें झननन नन नन झूम ॥
न्यामत प्यारी बादे बहारी चल रही सननन सूम ॥ ७ ॥

३१

चाल—कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली मोहे बांके डारे पहोंचा देती ॥

कैसे प्राणी के प्राणों का घात करे ।

तेरे दिलमें दयाका असर ही नहीं ॥
जो तू हरनों का बन में शिकार करे ।
क्या निगोदो नरक का खतरही नहीं ॥ १ ॥
जैनबानी सुनो ज़रा ग़ौर करो ।
जान औरों की अपनी सी ध्यान धरो ॥
ज़रा रहम करो अपने दिल में डरो ।
प्यारे जुल्म का अच्छा समरही नहीं ॥ २ ॥
भोले बनके पखेरू हैं डरते फिरें ।
मारे डरके तुम्हारे से दूर रहें ॥
वह तुम्हारा न कोई बिगार करें ॥
उनका बनके सिवा कोई घरही नहीं ॥ ३ ॥
त्रिण घास चरें अपना पेटभरें ॥
धन देश तुम्हारा न कोई हरें ॥
प्यारे बच्चों से अपने प्रीति करें ॥
उनके दिल में तो कोई भी शर ही नहीं ॥ ४ ॥
कामी लोगों ने इसको रवा है किया ॥
झूटा अपनी तरफ़से है मसला गढ़ा ॥
वरना पुराण क़ुरान में जीवों के मारन का ॥
आता कहीं भी ज़िकरही नहीं ॥ ५ ॥
दया मय है धरम सत जानो सही ।
जिनराजने है यही बात कही ॥
सुनो न्यामत, बिना दया धर्म कभी ।
प्यारे होगा मुकत में गुज़र ही नहीं ॥ ६ ॥

३२

राग—(नाटक) काहे कलपावे जलावें जानी जान तेरी जावें एम मन वारियां

काहे दुख पावे भरमावे प्यारे मान मोरी आवो निज द्वोरे ।टेक।

काशी मदीने में दरदर न फिर प्यारे—
करता है नाहक़ तू औरों की याद ॥
अपने में अपनेही जोवन को देखो जी—
तुझको मिले तेरे दिलकी मुराद ॥ १ ॥

ज्ञान तूही प्यारे ज्ञाता तूही—
तूही ज्ञे अपने दिलमें तू करतो विचार ॥
अपना ध्यान धरौ ध्यान ध्याता बनो—
नहीं औरके ध्यानसे पहोंचेंगे पार ॥ २ ॥

वेद पुरान कुरान पढ़े—
लखा अपना सरूप न आंख पसार ॥
किसकी खातिर होता फिरे है तू ख्वार—
कहे न्यामत है पर सब घर बार ॥ ३ ॥

इति श्री थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी समाप्तम्

पुस्तक मिलने का पता—
बाबू न्यामत सिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार
हिसार [पंजाब]

B. NIAMAT SINGH JAINI,
Secretary District Board
HISSAR (Punjab)

नोटिस

निम्न लिखित भाषा छंद बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पंडितोंने रचेथे जिनको अब संशोधन करके मोटे कागज़ पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयोंको पढ़कर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनो जैन शास्त्र स्त्री पुरुषोंके लिये बड़े उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर है॥ दोनो शास्त्र जैन मंदिरों में पढ़ने योग हैं:—

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित बनवारी लालजी जैनने सम्वत् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपवाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सुफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चरित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। सजिल्द मूल्य २)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपाई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार संशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धनकुमार जी का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। सजिल्द मूल्य १।)

(३) नमोकार मंत्रः—फूलदार बढ़िया मोटा कागज़ मू० ~)

पुस्तक मिलनेका पताः—

बा० न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हिसार।

मु० हिसार (जिला खास हिसार)

(पंजाब)

(नोटिस)

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थमाला के वह अंक जिनके सामने मूल्य लिखा गया है छप कर तय्यार हैं—बाकी अंक भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं:—

			नागरी	उर्दू
१	जिनेन्द्र भजन माला	...	।-)	०
२	जैन भजन रत्नावली	...	।)	०
३	मूर्ति मंडन प्रकाश (जैन भजन पुष्पांजली)	...	।)	०
४	जिनेन्द्र पूजा	...	=)	०
५	कर्ता खंडन प्रकाश (ईश्वर स्वरूप दर्पण)	...	॥)	०
६	भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक	...	१॥)	॥)
७	जैन भजन मुक्तावली	...	।)	०
८	राजल भजन एकादशी	...	-)	०
९	स्त्री गान जैन भजन पचीसी	...	=)	०
१०	कलियुग लीला भजनावली	...	=)	-)॥
११	कुन्ती नाटक	...	=)	०
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	॥।)	।=)
१३	अनाथ रुदन	...	-)	०
१४				
१५				
१६				
१७				
१८	जैन भजन शतक	...	।=)	०
१९	थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	...	≡)	=)
२०	मैनासुन्दरी नाटक (बढ़िया मोटे कागज़ मोटे अक्षर छटी अडीशन)	...	२॥)	०

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु० हिसार (पंजाब)

Niamat Singh Jain,

Secretary District Board, HISSAR (Punjab)